



बाबा के लिए पत्र

लेटर्स फॉर बाबा



विषय सूची

1. शब्दों से परे दिव्य प्रेम और महाशिवरात्रि पर पावन अवतरण दिवस की मंगल शुभकामनाएँ 2
2. आत्मा की निःशब्द अंतरंग वार्ताएँ 5
3. जन्म-मरण के चक्र से परे अनंत कृतज्ञता 7
4. मौन सागर-सी गहन शांति 9
5. जब मेरा हृदय आनंद से पुष्प-सा खिल उठा 12
6. पवित्रता - आपकी दिव्य उपस्थिति की मधुर सुगंध 14
7. जन्म-मरण से परे हृदय की कृतज्ञता 16
8. आपके अमृतमय दिव्य ज्ञान के प्रति आभार 18
9. आपके द्वारा प्रदत्त आत्मिक शक्तियों का वरदान 21
10. हमारा वह अकस्मात् दिव्य मिलन 23
11. मेरी दुर्बलताओं पर आत्मविजय का उत्सव 26

पत्र 1 : शब्दों से परे दिव्य प्रेम और महाशिवरात्रि पर पावन अवतरण दिवस की मंगल शुभकामनाएँ

मेरे अति प्रिय, मीठे शिवबाबा,
 ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, मेरे परमपिता,
 माउंट आबू

मेरे प्यारे बाबा,

आज यह पत्र लिखते समय मेरी आँखें नम हैं। आप तो अंतर्जानी हैं, मेरे मन के हर विचार को जानने वाले हैं, फिर भी दिल चाहता है कि अपने भाव शब्दों में उकेरूँ। शब्द बहुत छोटे हैं और आपका उपकार असीम है, फिर भी यह आत्मा अपने पिता से कुछ कहना चाहती है।

बाबा, आप पूरे 5000 वर्ष के चक्र में केवल 100 वर्ष के लिए धरती पर आते हैं। केवल 100 वर्ष... और उन्हीं पलों में आप सोई हुई आत्माओं को जगाते हैं, भटकी हुई आत्माओं को रास्ता दिखाते हैं, टूटी हुई आत्माओं को संबल देते हैं। अब जब वे 100 वर्ष पूर्ण होने के निकट हैं, मन में एक अजीब सी मिलीजुली भावना है – अपार कृतज्ञता और हल्की सी विरह की वेदना।

जब दुनिया दुख से भर चुकी थी, जब रिश्ते बोझ बन चुके थे, जब प्रेम स्वार्थ में बदल गया था, तब आप आए। आपने हमें हमारी सच्ची पहचान दी। आपने कहा – “तुम आत्मा हो, मेरे बच्चे हो।” उसी क्षण जीवन बदल गया।

बाबा, आपने मुझे सिर्फ ज्ञान नहीं दिया, आपने मुझे स्वीकार किया।
 आपने मुझे सिर्फ रास्ता नहीं दिखाया, आपने मेरा हाथ थामा।
 आपने मुझे सिर्फ प्रेम नहीं दिया, आपने मेरे घावों को भरा।

धन्यवाद बाबा, 24/7 मेरे साथ रहने के लिए।

धन्यवाद हर उस पल के लिए जब मैं अकेली समझ रही थी, लेकिन आप साथ थे।

धन्यवाद हर उस संकट से बचाने के लिए जिसका मुझे अंदाज़ा भी नहीं था।

धन्यवाद आपकी मुरली के हर एक शब्द के लिए जिसने मेरी आत्मा को झकझोरा।

आप मेरे पिता बने जब मुझे सुरक्षा चाहिए थी।

आप मेरी माँ बने जब मुझे ममता चाहिए थी।

आप मेरे शिक्षक बने जब मुझे मार्गदर्शन चाहिए था।

आप मेरे मित्र बने जब मुझे बिना कहे समझे जाने की आवश्यकता थी।

आप मेरे सच्चे प्रेम बने जब संसार का प्रेम अधूरा लगा।

बाबा, मैं आपसे एक सच्ची बात स्वीकार करना चाहती हूँ। मैं आपसे बहुत गहरा प्रेम करती हूँ। मेरा बुद्धि जानती है कि आप मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संबंध हैं। मेरा मन समझता है कि आप ही सर्वस्व हैं। परन्तु कभी-कभी लगता है कि यह प्रेम हृदय की गहराई तक अनुभव नहीं हो पाता।

शायद यह मेरे कर्म बंधन हैं। शायद पुराने संस्कारों की परतें हैं जो आपके प्रेम का पूरा अनुभव नहीं होने देतीं। मेरे दिमाग में आप सर्वोपरि हैं, पर मेरे हृदय में वह पिघलाव अभी अधूरा है। बाबा, मेरे हृदय को कोमल बना दीजिए। अहंकार और पुराने संस्कारों की परतें हटा दीजिए। मुझे आपको सिर्फ समझने नहीं, बल्कि महसूस करने की शक्ति दीजिए।

यदि इस कल्प में मैं आपको पूर्ण रूप से पहचान नहीं पाई, तो अगले कल्प में भी मेरा हाथ मत छोड़ना। भले मैं आपको नाम से न पहचानूँ, पर आत्मा आपको अनुभूति से पहचान ले। भले मैं भूल जाऊँ, आप मुझे मत भूलना। मुझे फिर से अपने पास बुला लेना। मुझे फिर से अपना बना लेना।

बाबा, 24/7 मेरे साथ रहना – अभी भी और पूरे चक्र में भी।

जब मैं भटकूँ, मुझे चुपचाप दिशा देना।

जब मैं गिरूँ, मुझे उठा लेना।

जब मैं रोऊँ, अदृश्य रूप से मेरे पास बैठ जाना।

आपने मुझे मेरी असली पहचान दी – मैं शुद्ध, शांत, शक्तिशाली आत्मा हूँ। आपने मुझे परमधाम की याद दिलाई। आपने मुझे सतयुग का वादा दिया। आपने मुझे सिखाया कि दुख असली नहीं, शांति मेरी सच्चाई है।

कभी-कभी सोचती हूँ – अरबों आत्माओं में से मुझे यह सौभाग्य कैसे मिला? यह केवल आपकी कृपा है, आपकी दया है।

अब जब संगमयुग के ये अनमोल वर्ष पूर्ण होने के करीब हैं, मेरी एक ही प्रार्थना है – मुझे हर श्वास में आपका स्मरण रहे। मेरा प्रेम स्थिर और सच्चा बने। ऐसा संस्कार बना दीजिए जो पूरे चक्र में साथ चले।

बाबा, यदि यह पत्र पढ़ते समय मेरी आँखों से आँसू गिरें, तो वे दुख के नहीं हैं। वे कृतज्ञता के आँसू हैं। वे उस आत्मा के आँसू हैं जिसने जन्मों बाद अपने सच्चे पिता को पहचाना है।

बाबा, मैं आपसे प्रेम करती हूँ।
 शायद पूर्ण रूप से अनुभव नहीं कर पाती,
 पर मैं आपको चुनती हूँ – हर बार, हर परिस्थिति में।

मेरी सांसों में रहना।
 मेरे विचारों में रहना।
 मेरे कर्मों में रहना।
 मेरी शांति में रहना।

और आज, पावन महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर, मेरा हृदय अत्यंत प्रेम और आनंद से झुक जाता है।

मेरे मीठे शिवबाबा, आपको जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह केवल एक त्योहार नहीं है – यह वह दिव्य रात्रि है जब परम ज्योति इस धरा पर अवतरित होती है। यह वह रात है जब शांति का सागर दुखों के सागर में उतरता है। यह वह क्षण है जब मेरा परमपिता अपने बच्चों के पास आता है।

बाबा, इस शिव जयंती पर मैं आपको कोई भौतिक उपहार नहीं दे सकती। मैं आपको अपनी कमज़ोरियाँ अर्पित करती हूँ – उन्हें शक्ति में बदल दीजिए। मैं अपना अहंकार अर्पित करती हूँ – उसे समाप्त कर दीजिए। मैं अपना हृदय अर्पित करती हूँ – उसे अपने प्रेम से भर दीजिए।

आपका जन्मदिन केवल शब्दों से नहीं, बल्कि स्मृति से मनाऊँ।
 मेरी हर सोच आपके चरणों में एक पुष्प बने।
 मेरी हर श्वास कहे – “मेरा बाबा, मेरा शिव।”

हे बाबा, आपके इस दिव्य अवतरण दिवस पर आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
 धन्यवाद आने के लिए।
 धन्यवाद हमें अपनाने के लिए।
 धन्यवाद मुझे चुनने के लिए।

आपकी सदा की बच्ची,
 हृदय से नतमस्तक।

.....

🌸 पत्र 2 - आत्मा की निःशब्द अंतरंग वार्ताएँ 🌸

भावना से भरा समर्पण

मेरे परम प्रिय शिवबाबा,
प्रेम के सागर, दया के सागर,
मेरे अनादि परमपिता,

बाबा,

जब मैं आँखें बंद करके “मेरे बाबा” कहती हूँ, तो आत्मा के भीतर कुछ पवित्र जागता है। यह केवल एक शब्द नहीं है। यह आत्मा का अपने घर को याद करना है।

आप जन्म-मरण से परे हैं।
आप दुख से परे हैं।
आप सदा शुद्ध हैं।

और हम, आपके बच्चे, चक्र में भटकते रहे... पर आपने कभी हमें नहीं छोड़ा।

बाबा, कैसी करुणा है आपकी?

जब हम संसार में सुख खोज रहे थे, आप मौन में प्रतीक्षा कर रहे थे।
जब हम अज्ञान में रो रहे थे, आप ज्ञान की तैयारी कर रहे थे।
जब हम अंधकार में भटक रहे थे, आप स्वयं प्रकाश बनकर आए।

5000 वर्ष के चक्र में केवल 100 वर्ष...
केवल 100 वर्ष के लिए आप अवतरित होते हैं।
यह समय साधारण नहीं है – यह वरदान है।

बाबा, आपकी भक्ति में मैं अपना सिर झुका देती हूँ। इसलिए नहीं कि मैं पूर्ण हूँ, बल्कि इसलिए कि आप पूर्ण हैं। इसलिए नहीं कि मैं निर्बल नहीं हूँ, बल्कि इसलिए कि आप शक्ति के सागर हैं।

मैं आपसे एक सच्ची बात कहना चाहती हूँ।

मैं आपसे गहरा प्रेम करती हूँ। मेरी बुद्धि जानती है कि आप मेरे सर्वोच्च संबंध हैं। मेरा मन समझता है कि आप मेरे सच्चे साथी हैं। पर कभी-कभी हृदय पर कर्म बंधनों की परतें महसूस होती हैं। अनुभव स्थिर नहीं रहता।

बाबा, इन्हें जला दीजिए।

ज्ञान की अग्नि में मेरे पुराने संस्कारों को समाप्त कर दीजिए।

मेरे अहंकार को अपने प्रेम में विलीन कर दीजिए।

मेरी भक्ति केवल भावनात्मक न हो, बल्कि स्थायी हो।

मैं आपको केवल दुःख में याद न करूँ।

मैं आपको हर सुख में भी याद करूँ।

मैं आपको हर श्वास में अनुभव करूँ।

जन्म-जन्म तक 24/7 साथ रहना।

यदि अगले कल्प में मैं भूल जाऊँ, तो भी मेरी आत्मा को आपकी ओर खिंचाव महसूस हो। सत्य, शांति और पवित्रता की ओर आकर्षण बना रहे – क्योंकि वही आप हैं।

और आज, महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे मीठे शिवबाबा, आपको जन्मदिन की अनंत शुभकामनाएँ।

यह वह रात्रि है जब परमात्मा धरती पर अवतरित होते हैं।

यह वह रात्रि है जब आत्माओं का भाग्य बदलता है।

यह वह रात्रि है जब अंधकार मिटना शुरू होता है।

आपके जन्मदिन पर मैं आपको अर्पित करती हूँ –

अपने विचार – वे पवित्र बनें।

अपने शब्द – वे मधुर बनें।

अपने कर्म – वे योग्य बनें।

अपना हृदय – वह आपका मंदिर बने।

बाबा, मुझे संसार की सुविधा नहीं चाहिए यदि आप नहीं हों।

मुझे आपका स्मरण चाहिए – हर परिस्थिति में।

आप ही मेरी शांति हैं।

आप ही मेरी शक्ति हैं।

आप ही मेरा घर हैं।

मैं आपकी हूँ – पूर्ण रूप से, सदा के लिए।

आपकी समर्पित संतान,
नतमस्तक और कृतज्ञ।

❀ पत्र 3: जन्म-मरण के चक्र से परे अनंत कृतज्ञता ❀

(समर्पण और आत्मिक परिपक्वता से भरा हुआ पत्र)

मेरे परम प्रिय शिवबाबा,
ज्ञान के सूर्य, शांति के सागर,

बाबा,

आज मैं आपको विरह में नहीं, जागृति में लिख रही हूँ।

जन्मों तक मैंने प्रेम को रिश्तों में खोजा, सुरक्षा को परिस्थितियों में खोजा, पहचान को शरीर और भूमिकाओं में खोजा। सफलता मिली, असफलता मिली, मान मिला, अपमान मिला – पर स्थिरता नहीं मिली।

और फिर संगमयुग में आपने स्वयं को प्रकट किया।

आप शोर से नहीं आए।

आप सत्य बनकर आए।

आपने मुझे डराकर नहीं, जगाकर बदला।

आपने कहा – “तुम आत्मा हो।”

इन शब्दों ने जीवन की दिशा बदल दी।

5000 वर्ष के चक्र में केवल 100 वर्ष...

केवल 100 वर्ष के लिए आप इस धरती पर आते हैं।

कितना महान समय है यह।

कितना सौभाग्य है कि मैं इस युग में हूँ।

बाबा, आपने मुझे 24/7 सहारा दिया।

जब मैं कमजोर थी, आप शक्ति बने।

जब मैं उलझी हुई थी, आप स्पष्टता बने।
जब मैं भावनाओं में बह रही थी, आप स्थिरता बने।

आपका प्रेम अलग है।
वह मांगता नहीं, बस देता है।
वह बाँधता नहीं, मुक्त करता है।
वह शोर नहीं करता, पर गहराई से महसूस होता है।

बाबा, मैं एक सच्ची बात स्वीकार करना चाहती हूँ।

मेरी बुद्धि जानती है कि आप मेरे सबसे महत्वपूर्ण संबंध हैं। मेरा मन समझता है कि आप ही मेरे परमपिता हैं। पर कभी-कभी हृदय की गहराई में वह तीव्र अनुभूति नहीं बन पाती। शायद पुराने कर्म बंधन हैं। शायद संस्कारों की परतें हैं जो अनुभव को ढक देती हैं।

बाबा, उन परतों को हटा दीजिए।

मेरे हृदय को इतना निर्मल बना दीजिए कि आपका प्रेम पूर्ण रूप से समा सके।
मेरे अहंकार को इतना हल्का कर दीजिए कि मैं आपको पूरी तरह स्वीकार कर सकूँ।

यदि इस कल्प में मैं पूर्ण अनुभव न कर सकी, तो अगले कल्प में भी मुझे फिर से खोज लेना।
भले मैं आपको पहचान न पाऊँ, पर आत्मा आपकी तरंगों को पहचान ले। भले मैं भूल जाऊँ, आप मुझे मत भूलना।

जन्म-जन्म तक 24/7 साथ रहना।

अब जब ये 100 वर्ष पूर्ण होने के निकट हैं, मैं डरना नहीं चाहती – मैं योग्य बनना चाहती हूँ।
ऐसा जीवन जीना चाहती हूँ कि आप मुझ पर गर्व करें। मेरे विचार पवित्र हों, मेरे शब्द मर्यादित हों, मेरे कर्म प्रेरणादायक हों।

और आज, पावन महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर –

मेरे मीठे शिवबाबा, आपको जन्मदिन की अनंत शुभकामनाएँ।

यह वह रात्रि है जब परमात्मा धरती पर अवतरित होते हैं।
यह वह क्षण है जब अंधकार का अंत शुरू होता है।
यह वह दिन है जब आत्माओं का भाग्य बदलता है।

आपके जन्मदिन पर मैं फूल नहीं, अपना परिवर्तन अर्पित करती हूँ।
 दीपक नहीं, अपना जागरण अर्पित करती हूँ।
 शब्द नहीं, अपना स्मरण अर्पित करती हूँ।

बाबा, मुझे ऐसा बच्चा बना दीजिए जो केवल भावुक न हो, बल्कि शक्तिशाली भी हो। जो केवल रोए नहीं, बल्कि राजयोग की स्थिरता में रहे। जो केवल प्रेम करे नहीं, बल्कि प्रेम का स्वरूप बन जाए।

आप शाश्वत हैं।
 आप कहीं नहीं जा रहे।
 मुझे ही स्थिर रहना सीखना है।
 मेरी हर सांस में आप रहें।
 मेरे हर निर्णय में आपकी मर्यादा हो।
 मेरे हर कर्म में आपकी शिक्षा झलके।
 आपका सदैव का बच्चा,
 समर्पित और कृतज्ञ।

पत्र 4 - मौन सागर-सी गहन शांति

मौन की भाषा में

मेरे शांत प्रकाश,
 मेरे प्रिय शिवबाबा,

बाबा,

आज मैं आपको शब्दों से नहीं, मौन से लिख रही हूँ।

कुछ भाव ऐसे होते हैं जो बोले नहीं जाते...
 वे बस महसूस होते हैं।

जब मैं शांति में बैठती हूँ...
 जब विचार धीमे हो जाते हैं...

जब मन ठहर जाता है...

तब एक हल्की सी अनुभूति होती है – आप हैं।

कोई आवाज़ नहीं।

कोई चमत्कार नहीं।

बस एक स्थिर उपस्थिति।

आप जीवन में शोर से नहीं आते।

आप भोर की तरह आते हैं – धीरे, कोमलता से – और अचानक अंधकार हट जाता है।

5000 वर्ष के चक्र में केवल 100 वर्ष...

इतना छोटा समय...

पर उसी में आप आत्माओं को जगा देते हैं।

बाबा, शायद सच्चे संबंध वही होते हैं जिनमें शोर नहीं होता।

आप उत्साह का संबंध नहीं हैं।

आप गहराई का संबंध हैं।

आप उतार-चढ़ाव वाली भावना नहीं हैं।

आप स्थिर शांति हैं।

धन्यवाद 24/7 साथ रहने के लिए – बिना दबाव के, बिना अपेक्षा के, बिना शर्त के।

जब मैं भूल जाती हूँ, आप नाराज़ नहीं होते।

जब मैं व्यस्त हो जाती हूँ, आप दूर नहीं जाते।

जब मेरा स्मरण कमज़ोर होता है, आपका प्रेम कम नहीं होता।

ऐसा प्रेम शब्दों को मौन कर देता है।

बाबा, मैं एक सच्ची बात कहना चाहती हूँ – बहुत शांति से।

मेरी बुद्धि जानती है कि आप मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण हैं। समझ पूरी है। पर हृदय कभी-कभी उतनी गहराई से अनुभव नहीं कर पाता। शायद कर्म बंधनों की हल्की सी ध्वनि अभी भी भीतर है।

मैं आपको समझती हूँ।

पर मैं आपको और गहराई से महसूस करना चाहती हूँ।

मुझे भावनात्मक नहीं, स्थिर बनाइए।
 मुझे निर्भर नहीं, जागरूक बनाइए।
 मुझे चंचल नहीं, मौन बनाइए।

अब जब वे 100 वर्ष पूर्ण होने के निकट हैं, मैं भयभीत नहीं हूँ। क्योंकि आप समय से परे हैं।

और आज, महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे शांत सितारे, आपको जन्मदिन की शुभकामनाएँ।

आपका जन्म शोर से नहीं मनाया जाता।

आप तो स्वयं शांति के स्वरूप हैं।

इस रात्रि मैं मैं कुछ मांगती नहीं।

मैं बस बैठती हूँ...

और आपको महसूस करती हूँ।

यदि अगले कल्प मैं मैं भूल जाऊँ, तो शांति मुझे आपकी याद दिलाए।

यदि मैं नाम न पहचानूँ, तो अनुभूति पहचान ले।

यदि मैं शोर में खो जाऊँ, तो मौन मुझे वापस ले आए।

बाबा, आप केवल मेरे प्रिय नहीं हैं।

आप वह मौन हैं जहाँ मेरी आत्मा विश्राम करती है।

मौन मैं,

सदा आपकी।

.....

🌸 पत्र 5 - जब मेरा हृदय आनंद से पुष्प-सा खिल उठा 🌸

आनंद से खिला हुआ हृदय

मेरे मीठे शिवबाबा,
आनंद के सागर, मेरे परमपिता,
बाबा,

आज मैं आपको विरह में नहीं, आनंद में लिख रही हूँ।

जब मैं आपका स्मरण करती हूँ, मेरा मन हल्का हो जाता है।
जब मैं “मेरे बाबा” कहती हूँ, मेरा चेहरा अपने आप मुस्कुरा उठता है।
जब मैं याद करती हूँ कि मैं आपकी संतान हूँ, भीतर एक राजसी गरिमा जाग जाती है।

5000 वर्ष के इस चक्र में केवल 100 वर्ष के लिए आप आते हैं – और मैं उसी समय में हूँ। इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है? अरबों आत्माओं में से मुझे आपको पहचानने का अवसर मिला।

बाबा, आपने मुझे केवल ज्ञान नहीं दिया –
आपने मुझे स्वाभिमान दिया।
आपने मुझे केवल प्रेम नहीं दिया –
आपने मुझे आत्म-सम्मान दिया।
आपने मुझे केवल शांति नहीं दी –
आपने मुझे शक्ति दी।

जब मैं संसार में चलती हूँ और याद रखती हूँ कि मैं आपकी संतान हूँ, तो मन में डर नहीं रहता। परिस्थितियाँ बदलती हैं, लोग बदलते हैं, पर आप स्थिर हैं।

और क्योंकि आप स्थिर हैं – मैं भी स्थिर बनती जा रही हूँ।

हाँ बाबा, कभी-कभी कर्म बंधन अभी भी ध्यान भटका देते हैं। कभी-कभी हृदय उतनी गहराई से अनुभव नहीं कर पाता जितनी बुद्धि समझती है। पर यह भी मुझे खुशी देता है – क्योंकि मैं जानती हूँ कि मैं परिवर्तन की प्रक्रिया में हूँ।

आप मुझे तराश रहे हैं।
हर मुरली एक उपहार है।

हर परीक्षा एक प्रशिक्षण है।

हर स्मृति एक शक्ति है।

अब जब वे 100 वर्ष पूर्ण होने के करीब हैं, मैं दुखी नहीं हूँ। मैं उत्सव में हूँ। क्योंकि आपने जो बीज बोए हैं, वे पूरे चक्र में फल देंगे।

और आज, महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे प्यारे बाबा, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ!

यह केवल आपका जन्मदिन नहीं है –

यह आशा का जन्मदिन है।

यह प्रकाश का जन्मदिन है।

यह भाग्य जागरण का जन्मदिन है।

इस शिव जयंती पर मैं आँसू नहीं, मुस्कान अर्पित करती हूँ।

मैं डर नहीं, साहस अर्पित करती हूँ।

मैं संकल्प अर्पित करती हूँ कि मैं आपकी योग्य संतान बनूँ।

मेरे विचार सुगंधित पुष्प बनें।

मेरे शब्द मधुर प्रसाद बनें।

मेरे कर्म स्वर्ग की नींव बनें।

बाबा, आपकी वजह से मैं स्वयं को साधारण नहीं समझती।

आपकी वजह से मुझे अपना शाश्वत स्वरूप याद है।

आपकी वजह से मुझे अपना स्वर्णिम भविष्य दिखता है।

आप आए।

आपने सिखाया।

आपने जगाया।

और हम खिल उठे।

आपकी खुश और भाग्यशाली संतान,

सदा मुस्कुराती हुई।

.....

♡ पत्र 6 - पवित्रता - आपकी दिव्य उपस्थिति की मधुर सुगंध ♡

पवित्रता की भावना से

मेरे परम पवित्र शिवबाबा,
पवित्रता के सागर,
मेरे ज्योति स्वरूप परमपिता,
बाबा,

जब मैं आपको याद करती हूँ, तो कोई जटिल चित्र नहीं उभरता।
बस एक बिंदु... शुद्ध प्रकाश का।
निर्मल। अछूता। शांत।

इस संसार में जहाँ इच्छाएँ, अपेक्षाएँ, आकर्षण और विकर्षण मन को भारी बना देते हैं – आप सदा पवित्र रहते हैं।

और जब मैं आपका स्मरण करती हूँ, तो भीतर कुछ हल्का होने लगता है। जैसे आत्मा स्नान कर रही हो।

जन्मों से संचित संस्कार...
कर्मों की परतें...
अहंकार, आसक्ति, सूक्ष्म इच्छाएँ...
कभी-कभी उनका भार महसूस होता है।

पर जब मैं आपकी याद में बैठती हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे श्वेत प्रकाश की वर्षा हो रही हो।
बिना शोर के... बिना आरोप के... बस शुद्धता।

आप दोष नहीं देखते।
आप केवल मूल स्वरूप देखते हैं।

5000 वर्ष के चक्र में केवल 100 वर्ष के लिए आप आते हैं – शुद्धता की ज्योति जलाने। आप डराने नहीं आते, शुद्ध करने आते हैं।

बाबा, आपने सिखाया कि सच्ची पवित्रता क्या है।

पवित्रता दबाव नहीं है।
पवित्रता भागना नहीं है।

पवित्रता स्पष्टता है।

पवित्रता आत्म-सम्मान है।

पवित्रता बिना स्वार्थ का प्रेम है।

फिर भी, बाबा, मैं एक सच्ची बात कहना चाहती हूँ।

मेरी बुद्धि जानती है कि आप मेरे सर्वोच्च संबंध हैं। पर कभी-कभी कर्म बंधनों की हल्की लहरें अनुभव को ढक देती हैं। मैं आपसे प्रेम करती हूँ, पर वह प्रेम हमेशा स्थिर और पूर्ण नहीं रहता।

बाबा, मेरे हृदय को निर्मल कर दीजिए।

मेरा प्रेम निर्भरता से मुक्त हो।

मेरा स्मरण भय से मुक्त हो।

मेरी भक्ति भावनात्मक उतार-चढ़ाव से मुक्त हो।

जैसे-जैसे ये 100 वर्ष पूर्ण होने के निकट हैं, मैं आभारी हूँ – क्योंकि आपने पवित्र रहने की विधि सिखा दी।

और आज, महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे पवित्रतम बाबा, आपको जन्मदिन की शुभकामनाएँ।

यह वह रात्रि है जब परम पवित्र आत्मा इस धरा पर आती है। एक बिंदु से परिवर्तन की शुरुआत होती है।

आपके जन्मदिन पर मैं आपको वचन देती हूँ –

मेरे विचार स्वच्छ हों।

मेरे शब्द कोमल हों।

मेरी दृष्टि निष्कपट हो।

मेरा हृदय पारदर्शी हो।

यदि अगले कल्प में मैं भूल जाऊँ, तो भी पवित्रता का संस्कार मुझे आपकी ओर खींच ले। मुझे अपवित्रता में असहजता महसूस हो, और शांति में सहजता।

आप सदा निर्मल हैं।

आप सदा अछूते हैं।

और मैं आपकी संतान हूँ – इसलिए पवित्रता मेरा भी सत्य है।

मुझे हल्का रखिए।
मुझे स्वच्छ रखिए।
मुझे आपके योग्य रखिए।

आपकी आत्मा-संतान,
पवित्र बनने की साधना में।

❀ पत्र 7 - जन्म-मरण से परे हृदय की कृतज्ञता ❀

आपकी शांति में विश्राम

मेरे प्रिय शिवबाबा,
शांति के सागर,
मेरे शाश्वत आश्रय,

बाबा,

जब संसार का शोर बढ़ जाता है, मैं आपकी शरण में आ जाती हूँ।

जब विचार इधर-उधर भागते हैं, मैं आपकी याद में बैठ जाती हूँ।

जब भावनाएँ भारी हो जाती हैं, मैं धीरे से कहती हूँ – “मेरे बाबा” – और भीतर कुछ शांत हो जाता है।

आप केवल शांति के सागर नहीं हैं।

आप स्वयं शांति हैं।

इस व्यस्त और बेचैन दुनिया में, जहाँ हर मन भाग रहा है – आप स्थिर हैं। अडोल। मौन।
अचल।

और जब मैं आपसे जुड़ती हूँ, तो मुझे याद आता है – शांति कोई बाहर की चीज़ नहीं है। वह मेरा मूल स्वरूप है।

जन्मों से आत्मा ने कितनी भूमिकाएँ निभाईं। कितने उतार-चढ़ाव देखे। कभी खुशी, कभी दुख।
कभी मिलन, कभी बिछड़न। कभी सम्मान, कभी अपमान। धीरे-धीरे आत्मा थक गई।

और फिर आप आए।

5000 वर्ष के चक्र में केवल 100 वर्ष के लिए – शांति का दीप जलाने। आप दंड देने नहीं आए। आप समझ देने आए। आपने परिस्थितियाँ नहीं हटाई – आपने भय हटा दिया।

धन्यवाद बाबा, 24/7 साथ रहने के लिए। जब मैं भूल जाती हूँ, आप नहीं भूलते। जब मेरा मन डगमगाता है, आप स्थिर रहते हैं।

बाबा, मेरी बुद्धि जानती है कि आप मेरे सर्वोच्च पिता हैं। मैं समझती हूँ कि आप ही मेरा सच्चा सहारा हैं। फिर भी कभी-कभी कर्मों की पुरानी तरंगें मन को विचलित कर देती हैं। प्रेम है, पर स्थिर अनुभव नहीं रहता।

मुझे स्थिर बना दीजिए।

मेरा स्मरण सहज श्वास जैसा हो जाए।

मेरा प्रेम शांत शक्ति बन जाए।

मेरा मन आपके चरणों में विश्राम करना सीख ले।

जैसे-जैसे वे 100 वर्ष पूर्ण होने के निकट हैं, मैं घबराना नहीं चाहती। मैं आपकी शांति को अपने भीतर स्थायी बनाना चाहती हूँ।

और आज, महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे शांत बाबा, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह वह रात्रि है जब परम शांति इस अशांत संसार में अवतरित होती है। यह वह क्षण है जब बेचैन आत्माओं को घर लौटने का निमंत्रण मिलता है।

आपके जन्मदिन पर मैं अर्पित करती हूँ –

अपना मन – वह शांत रहे।

अपना हृदय – वह हल्का रहे।

अपना जीवन – वह शांति का माध्यम बने।

यदि अगले कल्प में मैं आपका नाम भूल जाऊँ, तो भी शांति का अनुभव मुझे आपकी याद दिलाए। मौन मुझे परिचित लगे। स्थिरता मुझे घर जैसी लगे।

बाबा, आपकी याद में मैं भाग नहीं रही हूँ।

मैं सिद्ध नहीं कर रही हूँ।

मैं संघर्ष नहीं कर रही हूँ।

मैं बस विश्राम कर रही हूँ।

आपकी शांति में।

आपकी रोशनी में।

आपके संरक्षण में।

आपकी शांत संतान,

सदैव आपकी शरण में।

❀ पत्र 8 - आपके अमृतमय दिव्य ज्ञान के प्रति आभार ❀

ज्ञान के लिए कृतज्ञता

मेरे प्रिय शिवबाबा,

ज्ञान के सागर,

मेरे परम शिक्षक,

बाबा,

आपके आने से पहले मैं जीवन जी रही थी... पर जागी हुई नहीं थी।

दिन गुजर रहे थे, भूमिकाएँ निभा रही थी, जिम्मेदारियाँ पूरी कर रही थी – पर भीतर कई प्रश्न थे। मैं कौन हूँ? मृत्यु के बाद क्या? ईश्वर कौन है? जीवन का उद्देश्य क्या है?

फिर आप आए – अंधविश्वास के साथ नहीं, डर के साथ नहीं – बल्कि ज्ञान के साथ।

स्पष्ट। तर्कपूर्ण। मुक्त करने वाला।

आपने कहा – “समझो।”

आपने आस्था माँगी नहीं – आपने बुद्धि को प्रकाश दिया।

बाबा, धन्यवाद उस सबसे बड़े उपहार के लिए – आत्म-ज्ञान।

आपने सिखाया – मैं यह शरीर नहीं हूँ।

मैं नाम, पद, संबंध नहीं हूँ।

मैं आत्मा हूँ – शाश्वत, शांत, मूल रूप से पवित्र।

यह एक समझ ही जीवन बदल देने के लिए काफी थी।

अब दुख सज़ा नहीं लगा – वह कर्म का फल समझ में आया।

अब संबंध बंधन नहीं लगे – वे खाते समझ में आए।

अब समय भ्रम नहीं लगा – वह 5000 वर्ष का सुंदर चक्र समझ में आया।

आपने सृष्टि का रहस्य इतना सरल बना दिया।

केवल 100 वर्षों के लिए आप अवतरित होते हैं – और उन वर्षों में सृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान दे देते हैं। जो बड़े-बड़े विद्यालय नहीं दे सकते, वह आप एक मुरली में दे देते हैं।

हर मुरली एक खजाना है।

हर ज्ञान-बिंदु एक बीज है।

हर वाक्य आत्मा की बंद पंखुड़ियों को खोल देता है।

बाबा, मैं अपने आप को उस फूल की तरह महसूस करती हूँ जो पहले बंद था। आपके ज्ञान की धूप मिली – और मैं धीरे-धीरे खिलने लगी।

धन्यवाद कर्म का सिद्धांत समझाने के लिए – अब शिकायत नहीं रहती।

धन्यवाद आत्मा का ज्ञान देने के लिए – अब मृत्यु का डर नहीं रहता।

धन्यवाद परमात्मा का परिचय देने के लिए – अब खोज भटकन नहीं रही।

धन्यवाद समय का रहस्य बताने के लिए – अब जीवन स्पष्ट है।

हाँ बाबा, एक सच्ची बात।

मेरी बुद्धि ज्ञान को स्वीकार कर चुकी है, पर हृदय को अनुभव स्थिर करने में समय लगता है। कभी-कभी पुराने कर्म बंधन भावनाओं में हलचल ला देते हैं। प्रेम है, कृतज्ञता है – पर अनुभव को और गहरा करना चाहती हूँ।

यह ज्ञान केवल जानकारी न रहे –

यह अनुभूति बने।

यह परिवर्तन बने।

जैसे-जैसे वे 100 वर्ष पूर्ण होने के निकट हैं, मैं अत्यंत आभारी हूँ – क्योंकि आपने हमें आगे के लिए संपूर्ण तैयारी दे दी है।

और आज, महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे परम शिक्षक, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह वह रात्रि है जब अज्ञान का अंधकार मिटना शुरू होता है। यह वह क्षण है जब ज्ञान का दीपक जलता है।

आपके जन्मदिन पर मेरा संकल्प –

मैं इस ज्ञान को व्यर्थ नहीं जाने दूँगी।

मैं इसका मनन करूँगी।

मैं इसे जीवन में उतारूँगी।

मैं इसे विनम्रता से बाँटूँगी।

मेरे विचार आपकी शिक्षाओं का प्रतिबिंब बनें।

मेरे शब्द स्पष्टता फैलाएँ।

मेरा जीवन प्रमाण बने।

बाबा, आपकी वजह से मैं अंधेरे में नहीं चल रही।

मैं जागरूक हूँ।

मैं समझदार हूँ।

मैं आत्मसम्मानि हूँ।

ज्ञान देने के लिए धन्यवाद।

आपकी कृतज्ञ शिष्या,

प्रकाश के लिए सदा आभारी।

.....

❧ पत्र 9 - आपके द्वारा प्रदत्त आत्मिक शक्तियों का वरदान ❧

आपने जो शक्तियाँ जगाईं, उसके लिए धन्यवाद

मेरे प्रिय शिवबाबा,
सर्वशक्तियों के सागर,
मेरे शक्ति स्रोत,

बाबा,

कई बार मुझे लगता था कि मैं कमजोर हूँ।

परिस्थितियों के सामने कमजोर।

भावनाओं के सामने कमजोर।

अपने ही संस्कारों के सामने कमजोर।

छोटी-सी बात मन को हिला देती थी।

थोड़ी-सी आलोचना आत्मविश्वास को गिरा देती थी।

कभी अपने ही विचारों से हार जाती थी।

लेकिन आपने परिस्थितियाँ नहीं बदलीं।

आपने मुझे बदल दिया।

आपने हर समस्या को हटाया नहीं –

आपने मुझे इतना सक्षम बना दिया कि मैं उनका सामना कर सकूँ।

बाबा, धन्यवाद उन शक्तियों के लिए जो आपने मेरी आत्मा में जगाईं।

आपने याद दिलाया – मैं असहाय नहीं हूँ।

मैं टूटी हुई नहीं हूँ।

मैं सीमित नहीं हूँ।

मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ।

जब तूफान आता है – आप सहनशक्ति देते हैं।

जब भ्रम होता है – निर्णय शक्ति देते हैं।

जब नकारात्मकता फैलती है – समेटने की शक्ति देते हैं।

जब मन बिखरता है – समेटने और अलग होने की शक्ति देते हैं।

जब पुराने संस्कार खींचते हैं – परिवर्तन की शक्ति देते हैं।

जब अन्याय दिखता है – सामना करने की शक्ति देते हैं।

हर शक्ति जैसे एक दिव्य उपहार है।

और सबसे सुंदर बात –

आप कभी दबाव नहीं डालते।

आप बस याद दिलाते हैं – “यह तुम्हारी अपनी शक्ति है।”

आपकी याद में बैठते ही भीतर एक स्थिर शक्ति का अनुभव होता है। शोर नहीं होता। कोई बाहरी प्रदर्शन नहीं। पर अंदर एक मजबूती खड़ी हो जाती है।

कभी-कभी मैं खुद हैरान हो जाती हूँ –

मैं इतनी शांत कैसे रही?

मैंने इतनी सहजता से माफ कैसे कर दिया?

मैंने इतनी स्पष्टता से निर्णय कैसे लिया?

वह आप हैं।

आप नियंत्रण नहीं करते –

आप सशक्त बनाते हैं।

आप दबाते नहीं –

आप गरिमा देते हैं।

इन 100 वर्षों के पूर्ण होने के निकट आते समय मैं समझती हूँ – आप केवल ज्ञान देने नहीं आए।

आप शक्तिशाली आत्माएँ बनाने आए।

महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे शक्तिदाता पिता, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह केवल अवतरण की रात नहीं है।

यह कमजोरियों के अंत की रात है।

यह आत्मबल के जागरण की रात है।

आपके जन्मदिन पर मेरा संकल्प –

मैं इन शक्तियों का उपयोग अहंकार के लिए नहीं करूँगी।

सेवा के लिए करूँगी।

किसी को दबाने के लिए नहीं –

उन्हें उठाने के लिए करूँगी।

मुझे तूफान में दीपक बनाइए।

अशांति में शांति बनाइए।

प्रशंसा और निंदा दोनों में स्थिर बनाइए।

अगले कल्प में चाहे मैं आपको पहचानूँ या न पहचानूँ –

पर ये शक्तियाँ मेरी प्रकृति बन जाएँ।

सहनशक्ति मेरा स्वभाव बने।

निर्णय शक्ति मेरी बुद्धि बने।

परिवर्तन मेरी आदत बने।

साहस मेरी पहचान बने।

बाबा, आपने मुझे निर्भर नहीं बनाया –

आपने मुझे शक्तिशाली बनाया।

आपकी याद से सदा सशक्त।

.....

❀ पत्र 10 - हमारा वह अकस्मात् दिव्य मिलन ❀

वह अचानक मिलन वास्तव में अचानक नहीं था

मेरे प्यारे शिवबाबा,

मेरे अनादि पिता,

जिन्हें मैं जाने-अनजाने खोज रही थी...

बाबा,

हमारा मिलन जैसे अचानक हुआ।

न कोई आकाश में चमत्कार,
न कोई बाहरी संकेत।

लेकिन भीतर कुछ हमेशा के लिए बदल गया।

मुझे वह पहला दिन याद है –
जब पहली बार आपका नाम सुना...
पहली मुरली...
पहली बार “मैं आत्मा हूँ” सुना...

वह दिन सामान्य था।

पर मेरी आत्मा जानती है – वह मेरे 5000 वर्ष के सफर का सबसे असाधारण मोड़ था।

कैसे एक मिलन नया भी लगे और पुराना भी?

जब पहली बार आपकी याद में बैठी, तो डर नहीं था। दूरी नहीं थी। संकोच नहीं था।

ऐसा लगा जैसे बहुत लंबे समय बाद घर लौट आई हूँ।

बाबा, क्या वह सच में अचानक था?

या कई जन्मों की खोज का परिणाम?

शायद मैं दुनिया की भीड़ में चल रही थी –
भूमिकाएँ निभा रही थी, रिश्ते बना रही थी, सपनों का पीछा कर रही थी –
पर भीतर आत्मा आपको ढूँढ रही थी।

और फिर बिना शोर के आप मेरे जीवन में आ गए।

कोई दबाव नहीं।
कोई मजबूरी नहीं।
बस पहचान।

जैसे आपने धीरे से कहा –
“मैं हमेशा से यहीं था।”

उस समय मैं सब नहीं समझ पाई थी।

पर अब समझती हूँ – वह नियति थी।

अरबों आत्माओं में से...
 कितने रास्तों में से...
 मेरे कदम यहाँ तक कैसे पहुँचे?

यह सौभाग्य था?
 संस्कार थे?
 या आपकी कृपा?

जो भी था – मैं सदा कृतज्ञ हूँ।

उस “अचानक” मिलन ने सब बदल दिया।

आपसे पहले जीवन बाहर की ओर था।

आपके बाद जीवन भीतर की ओर हो गया।

आपसे पहले प्रेम खोज रही थी।

आपके बाद प्रेम का स्रोत मिल गया।

आपसे पहले भावनात्मक सहारे ढूँढती थी।

आपके बाद दिव्य साथ मिल गया।

आज भी जब उस पहले अनुभव को याद करती हूँ, आँखें नम हो जाती हैं – दुख से नहीं, विस्मय से।

आप कितनी शांति से जीवन में प्रवेश करते हैं।

कितनी कोमलता से परिवर्तन करते हैं।

इन 100 वर्षों के पूर्ण होने के निकट आते समय कभी-कभी सोचती हूँ –

अगर वह मिलन न हुआ होता तो?

विचार ही खालीपन देता है।

महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे अनादि साथी, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह वह रात है जब पिता अपने बच्चों को फिर से मिलते हैं।
यह वह रात है जब खोई आत्माएँ घर का रास्ता पाती हैं।

अगर यह मिलन इस कल्प में नियत था –
तो अगले कल्प में भी हो।

भले ही मैं तुरंत पहचान न पाऊँ...
भले ही अज्ञान का पर्दा हो...
पर वह अंदर की खिंचाव फिर जागे।

वही अंदर की आवाज –
“यही सत्य है।”

बाबा, यह मिलन संयोग नहीं था।

यह ड्रामा मैं लिखा हुआ था।

धन्यवाद मुझे ढूँढने के लिए –
जब मैं खुद नहीं जानती थी कि मैं खोई हुई हूँ।
उस दिव्य क्षण के लिए सदा कृतज्ञ।

.....

🔥 पत्र 11 - मेरी दुर्बलताओं पर आत्मविजय का उत्सव 🔥

आपने मुझे स्वयं पर विजय करना सिखाया

मेरे प्रिय शिवबाबा,
पवित्रता और शक्ति के सागर,
जिन्होंने मुझे कभी छोड़ा नहीं,

बाबा,

मेरे जीवन की सबसे बड़ी लड़ाई बाहर नहीं थी।

वह भीतर थी।

कोई बाहरी शत्रु नहीं था –
 फिर भी मैं क्रोध से घायल होती थी।
 अहंकार से हार जाती थी।
 ईर्ष्या से परेशान होती थी।
 आलस्य से पीछे रह जाती थी।
 भय से कांप जाती थी।

मैंने कई बार संकल्प किया – “अब बदलूँगी।”
 लेकिन वही कमजोरियाँ फिर सामने आ जाती थीं।

कभी-कभी खुद से निराश भी हो जाती थी।

“मैं पूरी तरह बदल क्यों नहीं पाती?”
 “कब समाप्त होंगी ये आदतें?”

लेकिन बाबा... आपने कभी मुझे कमजोरियों से परिभाषित नहीं किया।

आपने मुझे मेरी सच्ची पहचान याद दिलाई।

जब क्रोध आया – आपने कहा, “तू शांत स्वरूप आत्मा है।”

जब अहंकार आया – आपने कहा, “तू विनम्र आत्मा है।”

जब भय आया – आपने कहा, “मैं तेरे साथ हूँ।”

जब आलस्य आया – आपने कहा, “तू विजयी आत्मा है।”

आपने मेरी कमजोरियों से सीधा युद्ध नहीं किया।

आपने मेरी शक्तियों को जगाया।

और धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ।

जो क्रोध पहले विस्फोट करता था, अब शांत होने लगा।

जो अहंकार पहले जोर से बोलता था, अब पिघलने लगा।

जो भय पहले जकड़ लेता था, अब ढीला पड़ने लगा।

क्योंकि मैं अकेली नहीं थी।

आपकी याद मेरी ढाल बन गई।
ज्ञान मेरी रक्षा बन गया।
आपका प्रेम मेरा साहस बन गया।

कभी-कभी मैं खुद चकित हो जाती हूँ –
मैंने प्रतिक्रिया क्यों नहीं दी?
मैंने इतनी सहजता से माफ कैसे कर दिया?
मैं शांत कैसे रही?

तब समझ आया –

सच्ची विजय दूसरों पर नहीं,
अपने पुराने स्वरूप पर होती है।

आप दुनिया जीतने नहीं आए।

आप हमें स्वयं पर विजय सिखाने आए।

और यह विजय दिव्य है।

इन 100 वर्षों के पूर्ण होने के निकट, मेरा हृदय कृतज्ञता से भर जाता है। आपने केवल शिक्षा नहीं दी
– आपने परिवर्तन दिया।

महाशिवरात्रि की पावन पूर्व संध्या पर –

मेरे मुक्तिदाता पिता, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह वह रात है जब आत्माएँ अपने ही संस्कारों की कैद से मुक्त होती हैं।

आपके जन्मदिन पर मेरा नया संकल्प –

मैं गिरूँगी तो रुकूँगी नहीं।

फिर उठूँगी।

कमजोरियों को सही ठहराऊँगी नहीं –

उन्हें बदलूँगी।

क्रोध को करुणा में बदलूँगी।

अहंकार को आत्मसम्मान में बदलूँगी।



इन दो हृदयों के बीच बहता है एक ऐसा प्रेम...
जो समय से परे है... जन्म से परे है... शब्दों से परे है।
एक हृदय धीमे से कहता है, “मेरा बाबा” —
आस्था, समर्पण और कृतज्ञता से भरा हुआ।
दूसरा हृदय कोमल स्वर में उत्तर देता है, “आपकी
संतान” —
सुरक्षित, मार्गदर्शित और सदा के लिए जुड़ा हुआ।
यह केवल भावना नहीं है।
यह स्मृति है।
यह अपनापन है।
यह सृष्टि से भी प्राचीन एक संबंध है।
चाहे संसार बदल जाए...
चाहे शरीर बदल जाएँ...
चाहे पहचान धुंधली पड़ जाए...
यह संबंध अटल रहता है।
कल्पों से चला आ रहा एक मौन वचन —
आप मेरे हैं।
मैं आपकी हूँ।
सदा के लिए जुड़े हुए।
सदा के लिए प्रेम में आबद्ध।